International Journal of Leading Research Publication (IJLRP)

E-ISSN: 2582-8010 ● Website: www.ijlrp.com ● Email: editor@ijlrp.com

राजगढ़ की निराश्रित महिलाओं की समस्याओं का एक अध्ययन

शोधार्थी – शांतिलाल चंद्रवंशी

सारांश – इस शोध पत्र में हमने राजगढ़ की निराश्रित महिलाओं की समस्या का एक अध्ययन किया है जिसमें हमने मुख्यतः निराश्रित महिलाओं के निराश्रित होने का करण पता करने का प्रयास किया है। इसमें हमने जिले राजगढ़ की दो तहसील, राजगढ़ एवं खिलचीपुर को शामिल किया। इन दोनों तहसीलों से हमने 6-6, गांव इस तरह कुल मिलाकर 12 गांव में से 60 महिलाओं का अध्ययन किया है जिसमें पाया गया है कि महिलाएं किस कारण से मुख्यतः निराश्रित है और समाज की मुख्य धारा में शामिल नहीं है एवं सरकार द्वारा उनके निराश्रित होने को दूर करने के लिए क्या प्रयास किये जा रहे और क्या प्रयास होने चाहिए। इसका विश्लेषण हमने इस शोध पत्र में किया है। ताकि निराश्रित महिलाओं को समाज की मुख्य धारा में जोड़ा जा सके और राष्ट्रीय विकास में अग्रिम भूमिका निभा सके। मध्य प्रदेश सरकार द्वारा निराश्रित महिलाओं के लिए कई योजनाओं का संचालन किया जा रहा है ताकि महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाया जा सके।

मूलशब्द – निराश्रित, तहसील, समाज, महिलाओं, मध्य प्रदेश, गांव

➢ ऐतिहासिक अवधारणा –

राजगढ़ का प्राचीन नाम झंझनीपुर या झंझेपुर था. पूर्व में यह एक छोटा सा गांव था. जहां भीलों की बस्ती थी. रावत मोहन सिंह ने सन् 1640 ई. में भीलों की सेना को परास्त कर यहां अपना शासन स्थापित किया तथा सन् 1645 ई. में किला एवं महल बनवाये। राजा-रजवाड़ों के अधीन रहा राजगढ़ नगर प्रदेश के मालवा अंचल का भू-भाग है. अतीत में यह नगर मौर्य, शुंग, कुषाण, गुप्त, क्षेत्रप, परमार तथा मुगल शासकों के अधीन रहा. राजगढ़ नगर का गौरव यहां के परमार वंशीय शासक रहे हैं, जो ऊमटवंशी हैं, जो कि परमार राजपूतों की एक शाखा है।

यहां पर वर्ष 1640 से 1937 तक विभिन्न शासकों का शासन रहा है, जो रावत मोहन सिंह से 1640 आरंभ होकर विक्रमादित्य द्वारा 1939 तक शासित रहा. इस अवधि में 12 शासकों द्वारा राज किया गया. राजगढ़ किले का निर्माण 1645 ई. में रावत मोहन सिंह द्वारा कराया गया था, इसके 5 मुख्य द्वार हैं. इसके अंदर राज राजेश्वर श्री चतुर्भुजनाथ तथा श्री नृसिंहजी के प्राचीन

मंदिर हैं. इसके अतिरिक्त नरसिंह महल, खाती महल, खोयरी का शिवजी मंदिर, रघुनाथगढ़ का प्राचीन मंदिर, विनय विकास महल, राजमहल, राधेश्यामजी का मंदिर, श्री जी का मंदिर प्रसिद्ध एवं दर्शनीय स्थल है।

➢ भौतिक अवस्थिति -

नेवज नदी के किनारे अवस्थित राजगढ़ नगर, राजस्व संभाग भोपाल का जिला मुख्यालय है। यह राजधानी भोपाल से 139 किलोमीटर सड़क दूरी पर स्थित है. यह नगर जबलपुर-जयपुर राष्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक 52 के दोनों ओर बसा हुआ है. राजगढ़, समुद्र सतह से लगभग 400 मीटर ऊंचाई पर 24° 0" उत्तरी अक्षांश तथा 76° 44" पूर्वी देशांतर रेखा पर स्थित है.

यह नगर सड़क मार्ग से राजस्थान के महत्वपूर्ण पर्यटक नगरों-उदयपुर, अजमेर एवं जयपुर से सीधा जुड़ा हुआ है. नगर का स्वरूप बिखरी हुई टेकरियों एवं पहाड़ियों से मिलकर बना है. यहां की भूमि पथरीली होने के कारण बहुमूल्य वृक्ष नहीं है।

➢ **राजगढ़ की जनसंख्या** –

राजगढ़ जिले की जनसंख्या वर्णित है। इस तालिका में प्रत्येक 10 वर्ष पश्चात जनगणना के अनुसार दशक 1981 में राजगढ़ जिले की जनसंख्या 801384 है, जिनमें पुरुषों की संख्या 411431 तथा स्त्रियों की संख्या 389953 है। इसका स्त्री पुरूष अनुपात यानि प्रति एक हजार पुरुषों पर स्त्रियों की संख्या 926 हैं, यानि जनसंख्या दर में वृद्धि 24.37% है। इस दशक में जनसंख्या का घनत्व प्रति वर्ग किमी 130 है। अगले दशक यानि 1991 में जिले की जनसंख्या 992764 है। जिनमें पुरुषों की संख्या 514452 तथा स्त्रियों की संख्या 478312 है, स्त्री पुरूष अनुपात 923 तथा जनसंख्या दर में वृद्धि 26.29% हैं तथा प्रति वर्ग किमी जनसंख्या का घनत्व 161 है।

वर्ष 2001 में जिले की जनसंख्या 1254085 है जिनमें पुरुषों की संख्या 649106 तथा स्त्रियों की संख्या 604979 है। प्रति एक हजार पुरूषों पर स्त्रियों की संख्या 947 तथा दशकीय दर में वृद्धि 29. 46% है। प्रति एक वर्ग किमी पर जनसंख्या का घनत्व 204 है। 2011 की दशकीय जनसंख्या जिले की 15,45,814 है, जिनमें पुरुषों की संख्या 7,90,212 तथा स्त्रियों की संख्या 7,55,602 है।

राजगढ़ जिले की जनसंख्या

वर्ष	जिले की जनसंख्या	पुरूष	स्त्री	स्त्री–पुरूष अनुपात प्रति हजार पुरूषों पर स्त्रियाँ	जनसंख्या दर में वृद्धि	घनत्व/वर्ग कि.मी
1981	801384	411431	389953	926	24.37%	130
1991	992764	514452	478312	923	26.29%	161
2001	1254085	649106	604979	947	29.46%	204
2011	15,45,814	7,90,212	7,55602	955	23.3 %	251

➢ शोध उद्देश्य –

1. निराश्रित महिलाओं की समस्याओं कि समस्या का अध्ययन करना
2. निराश्रित महिलाओं की समस्या के निवारण के उपाय ज्ञात करना

➢ निदर्शन का चयन

प्रस्तुत शोध पेपर में निर्देशन की उद्देश्यपूर्ण विधि का चयन किया गया है। समग्र के रूप में राजगढ़ जिले के ग्रामीण परिवारों का चयन किया गया है। प्रस्तुत शोध में राजगढ़ जिले के प्रमुख 2 तहसीलों के प्रत्येक तहसील से 6 गाँव तथा प्रत्येक गाँव से 5 परिवारों का चयन किया किया गया है। इस प्रकार कुल 12 गाँवों तथा कुल 60 उत्तरदाता का चयन किया गया है।

निराश्रित महिला वह है जिसके पास परिवार या रिश्तेदारों से कोई समर्थन नहीं है और वे जीवन की बुनियादी आवश्यकताओं से वंचित हैं। निराश्रित महिला का तात्पर्य ऐसी महिला से है जिसके पास आजीविका का कोई स्वतंत्र स्रोत नहीं है या जिसकी परिवार के किसी सदस्य या रिश्तेदार द्वारा देखभाल नहीं की जा रही है और इसमें वे महिलाएं भी शामिल हैं जो तलाकशुदा हैं। (राष्ट्रीय महिला आयोग 2009) निराश्रित महिलाओं में ऐसी महिलाएं शामिल हैं जो विधवा है, तलाकशुदा हैं. अलग हो चुके हैं. अनाथ हैं, भिखारी है, सड़क पर रहने वाली महिला है, यौनकर्मी हैं, जो हाल ही में पुरानी मानसिक बीमारी के कारण जेल से रिहा हुए हैं, यौन शोषण और हिंसा के शिकार

है, धोखा दिया गया है (शादी से पहले गर्भवती हो जाना), प्रेम में विफलता, अतिरिक्त, वैवाहिक संबंध, यहां तक कि बुजुर्ग भी जो पुरानी मानसिक बीमारी और मनोभ्रंश से पीडित हैं। अंत में, निराश्रित महिला ऐसी महिला है, जिसका कोई सहारा न हो, जिसके पास कोई आश्रय ना हो। जो किसी भी कारण से बेसहारा हो गई है। जिसे जीवन यापन के लिए किसी आश्रय की आवश्यकता है।

उत्तदात्रियों के वैयक्तिक एवं सामाजिक परिवेश के संबंध में ज्ञान प्राप्त करना समाजशास्त्र की महत्वपूर्ण आवश्यकता एवं विशेषता है क्योंकि पीड़ित महिलाओं की अभिवृत्ति का अध्ययन तब तक उचित ढंग से नहीं किया जा सकता जब तक कि उत्तरादात्रियों की व्यक्तिगत, शैक्षिक, पारिवारिक एवं आर्थिक दशाओं के विषय में सूक्ष्म जानकारी प्राप्त न कर ली जाए।

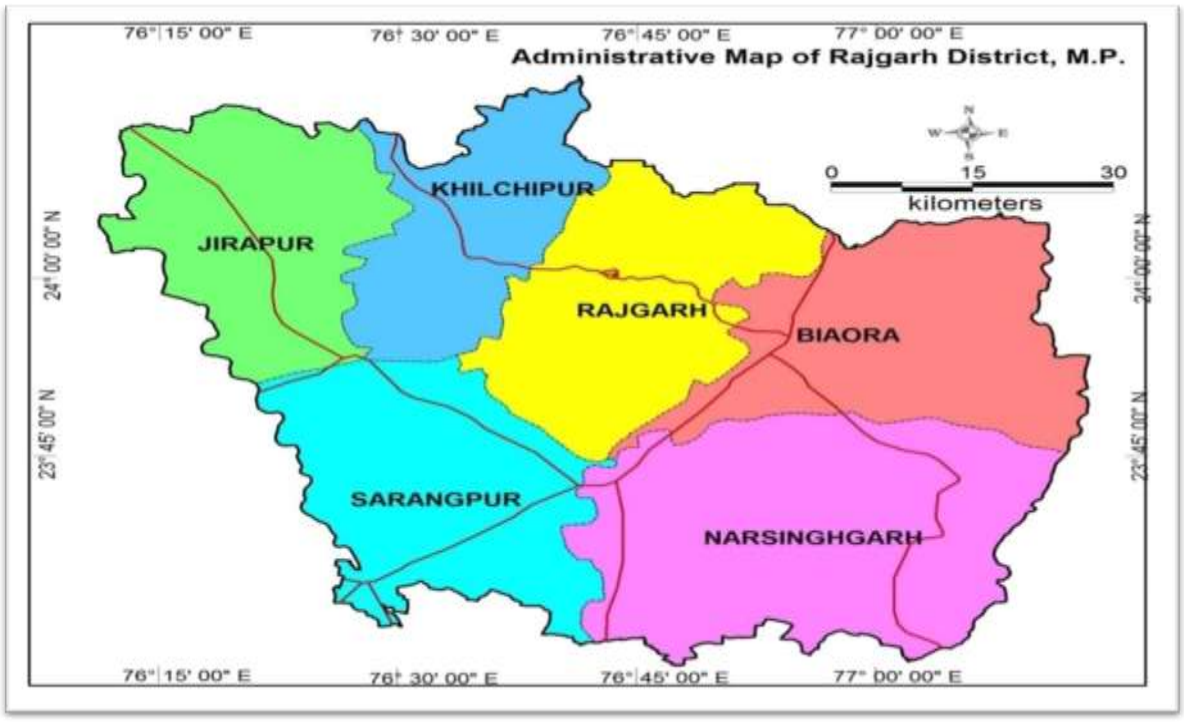

राजगढ़ का मानचित्र

भारतीय सामाजिक व्यवस्था के अंतर्गत व्यक्ति की वैयक्तिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थित का निर्धारण व्यक्ति की आयु वर्ग, शिक्षा, व्यवसाय, विवाह, परिवार एवं रहन-सहन की दशाओं के माध्यम से किया जाता है। इसी के द्वारा व्यक्ति समाज में विशेषीकरण प्राप्त करता है।

अतः व्यक्तित्व के विकास एवं मनोवृत्ति को निर्धारित करने वाले कारकों में व्यक्ति की सामाजिक, आर्थिक तथा पारिवारिक पृष्ठभूमि मुख्य होती है। जिस प्रकार के वातावरण एवं सामाजिक, आर्थिक स्तर में व्यक्ति का पोषण होता है, उसी के अनुरुप वह सामाजिक, सांस्कृतिक मान्यताओं एवं मूल्यों को सीखता है। सीखकर इन्हीं के आधार पर वह व्यवहार करता है। इस प्रकार से व्यक्ति की सामाजिक एवं आर्थिक दशाएं व्यक्ति की सामाजिक प्रस्थिति एवं सामाजिक भूमिका में निर्धारण करती हैं।

परपंरागत समाज में व्यक्तियों का निर्धारण अनेक प्रस्थिति व समूहों के माध्यम से होता था, उसकी सामाजिक, आर्थिक, प्ररिस्थिति अपने समूहों से ही संबंधित होती है। इस प्रकार के समूहों में सामाजिक परिर्वतन का प्रभाव,गतिशीलता की दिशा भी समूहों की सामाजिक, आर्थिक पृष्ठभूमि से संबंधित होती थी।

वर्तमान समय में आधुनिकीकरण, पश्चिमीकरण, वैश्वीकरण, नवीन, लोकतांत्रिक विधान, परिवर्तित शिक्षा प्रणाली तथा मुक्त सामाजिक व्यवस्था के फलस्वरुप नवीन सामाजिक एवं राजनैतिक मूल्यों का विकास तो हुआ, किंतु परिवर्तन के कारणों के प्रभाव के परिणामस्वरूप व्यक्ति, कर्ता किस प्रकार के मूल्यों को अपनाता है एवं उसके व्यक्तित्व का विकास एवं मनोवृत्तियों का निर्धारण किन-किन मूल्यों पर आधारित होता है। यह प्रश्न सामाजिक, आर्थिक वातावरण से घनिष्ठ रुप से संबंधित होता है।

इन्हीं तथ्यों की महत्वता को ध्यान में रखते हुए वर्तमान अध्ययन के अंतर्गत उत्तरदात्रियों की वैयतिक्त, सामाजिक-आर्थिक, पृष्ठभूमि की जानकारी के लिए तथ्यों का संकलन किया गया है। संकलन हेतु उत्तरादात्रियों को उनकी आयु, पारिवारिक स्थिति, शैक्षणिक स्थिति, आर्थिक स्थिति, आदि रुप में वर्गीकृत किया गया है।

➢ उत्तरदात्रियो से साक्षात्कार :-

शोधकर्ता ने जब मध्य प्रदेश के राजगढ़ की दो (राजगढ़ और खिलचिपुर) तहसीलों के 12 ग्राम के 60 उत्तरदाताओं से यह जवाब किया कि आपका निराश्रित होने का क्या कारण है तो निराश्रित महिलाओं ने उसके जवाब में भिन्न-भिन्न जवाब दिए जिसके आधार पर हमें ज्ञात कर सकते हैं कि महिलाओं के निराश्रित होने का मुख्य कारण क्या है निम्नलिखित तालिका में यह हम ज्ञात करने की कोशिश करेंगे।

क्रमांक	**निराश्रित होने के कारण**	उत्तरादात्रियां	
		आवृत्ति	प्रतिशत
1.	शिक्षा	15	25
2.	परिवार	20	33.3
3.	सरकार	15	25
4.	सामाजिक प्रथा	10	16.6
	योग	**60**	**100**

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर यह ज्ञात किया जा सकता है कि मध्य प्रदेश के राजगढ़ तहसील के 12 गांव की निराश्रित महिलाओं का 33% यह जवाब रहा कि वह कहीं ना कहीं अपने परिवार और परिवार के बिना सहयोग के कारण निराश्रित है। वही 25% और 25% महिलाओं ने शिक्षा एवं सरकार को जिम्मेदार माना कि बिना सहयोग के उन्हें निराश्रित जीवनी बिताना करना पड़ रहा है और 16.6% महिलाओं ने भी सामाजिक प्रथाओं को जिम्मेदार माना कि कहीं ना कहीं वह उनकी निराश्रित होने का कारण है।

निष्कर्ष - परिवार एक सामाजिक परिवेश का एक अंग है जो परिवार का सामाजिक आर्थिक और शैक्षणिक रूप से सहयोग करता है। निराश्रित महिलाओं के दृष्टि में देखे तो कहीं ना कहीं परिवार की तरफ से सहयोग या कहीं ना कहीं परिवार का पुरुष प्रधान होना उनके निराश्रित होने का मुख्य कारण है।

- **परिवार मे निराश्रित होने का कारण** –

किसी भी महिला के लिए परिवार उसकी सबसे मजबूत शक्तिशाली अंग होता है। इसमें महिला अपने इच्छाओं की अभिव्यक्ति कर सकती है किंतु परिवार में या समाज में कई बार ऐसी कठिनाइयां उत्पन्न होती है कि महिला अपनी इच्छाओं के अभिव्यक्ति नहीं कर पाती है एवं उसे कठोर मानसिकता को सहन करते हुए निराश्रित होने की ओर अग्रेषित होती है। जिसमें कई कारण शामिल होते क्यों महिला अभिव्यक्त नहीं कर पाती है अपनी चीजों को इसके लिए हमने उत्तरदात्रियों से जानने का प्रयास किया कि उसके लिए क्या कारण है।

क्रमांक	**अभिव्यक्ति न कर पाने का कारण**	उत्तरादात्रियां	
		आवृत्ति	प्रतिशत
1.	विवाह	12	20
2.	शिक्षा	08	13.3
3.	डर की भावना	16	26.6
4.	पुरुष प्रधान समाज	24	40
	योग	**60**	**100**

उपरोक्त तालिका के विश्लेषण के आधार पर यह ज्ञात किया जा सकता है कि महिलाएं निराश्रित होने के पीछे कहीं ना कहीं शिक्षा, विवाह, डर की भावना एवं पुरुष प्रधान जैसे कारणों को विशेष रूप से निराश्रित होने का मुख्य कारण मानती है। इसमें मुख्यतः 20% महिलाओं ने विवाह को जिम्मेदार माना कि महिलाएं विवाह करने के पक्ष अपनी अभिव्यक्ति या सहयोग की भावना से निराश्रित होने की और अग्रेषित होती है। वही 13.3% महिलाओं का कहना था कि शिक्षा कहीं ना कहीं मुख्य भूमिका निभाती है जो महिलाएं निरक्षर होती है उन्हें निराश्रित होने का सामना करना पड़ता है। वही 26.6% महिलाओं ने यह जवाब दिया कि समाज एवं परिवार की डर की भावना कहीं ना कहीं उनके मन में एक डर पैदा करती है और वह उनको निराश्रित होने की ओर अग्रेषित करती है. वही सबसे अधिक महिलाओं ने जिसमें 40% महिलाएं आती है। इसमें पुरुष प्रधान समाज को जिम्मेदार माना कि उनके निराश्रित होने के पीछे पुरुष समाज की मानसिकता है जो कहीं ना कहीं उनका दमन करती है और वह वहां से मनमुटाव होकर निराश्रित होने का रास्ता चुनती है।

इस तरह हमें दोनों जवाब में राजगढ़ की दो तहसील जिसमें 12 गांव शामिल थे। निराश्रित महिलाओं से साक्षात्कार करने पर हमें यह ज्ञात होता है कि आज भी कहीं ना कहीं ग्रामीण क्षेत्र में पुरुष समाज की मानसिकता या कहे पुरुष समाज की प्रधानता महिलाओं को दमन के रूप में निराश्रित होने पर मजबूर करती है और महिला अपने को एकांत कर अपना जीवन व्यापन करती है जिसमें सरकार के द्वारा उनका समय-समय पर सहयोग किया जाता है।

➢ **निष्कर्ष -**

निराश्रित महिलाओं की समस्याओं को दूर करने के लिए उन्हें शिक्षा, कौशल विकास और रोजगार के अवसर प्रदान करना, सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित करना, आर्थिक और मानसिक रूप से सशक्त बनाना, सुरक्षित और भेदभाव-मुक्त वातावरण तैयार करना तथा सरकारी योजनाओं और जागरूकता अभियानों के माध्यम से सहायता प्रदान करना आवश्यक है। राजगढ़ जिले में शक्ति सदन योजना अंतर्गत निराश्रित महिलाओं को आश्रय प्रदान करने के लिए 50 महिलाओं की क्षमता वाली संस्था गोपाल महिला मंडल संचालित हैं। महा सितंबर 2025 में ही विभिन्न कारणों से शोषित/ पीड़ित, निराश्रित 24 महिलाओं को आश्रय प्रदान किया गया, सितंबर माह के अंत तक 12 महिलाएं संस्था में निवास कर रही थी

जिले में निराश्रित महिलाओं की सहायता के लिए *वन स्टॉप सेंटर* क्रियान्वित है इन उपायों से महिलाएं आत्मनिर्भर बनेंगी और समाज में सम्मानजनक स्थान प्राप्त कर सकेंगी। राज्य सरकारें विधवाओं और निराश्रित महिलाओं के लिए पेंशन योजनाएं और अन्य सामाजिक सुरक्षा योजनाएं चला रही हैं, जैसे तमिलनाडु में एकीकृत सामाजिक सुरक्षा योजना। स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिलाओं को वित्तीय और सामाजिक समर्थन प्रदान किया जाता है। कुछ राज्यों में महिला कल्याण बोर्डों का गठन किया गया है जो निराश्रित महिलाओं के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और प्रशिक्षण की व्यवस्था करते हैं। ये संगठन महिलाओं को कानूनी सहायता, शिक्षा और आर्थिक सहायता प्रदान करके सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

➢ संदर्भ सूची –

- राजगढ़ विकास योजना, संचालनालय नगर तथा ग्राम निवेश, मध्यप्रदेश,2021. पेज-12
- राष्ट्रीय महिला आयोग 2009
- https://share.google/8OrGfogpCp0KQvrmg
- कोकर, ए.ओ. (2018). दक्षिण-पश्चिमी नाइजीरिया के लागोस में एक निराश्रित पुनर्वास केंद्र के निवासियों के बीच मानसिक रुग्णता. नाइजीरियाई स्वास्थ्य जर्नल।
- साक्षात्कार अनुसूची
- https://rajgarh.nic.in/